जयवंत विजयी जीवन के लिए तीन कदम

फ्रैंकलीन के नोट्स

प्रकाशितवाक्य 12:10-11 फिर मैं ने स्वर्ग से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर **दोष लगानेवाला**, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, **गिरा दिया गया है**। वे (1) **मेम्ने के लहू** के कारण और (2) अपनी **गवाही के वचन के कारण** उस पर जयवन्त हुए, और (3) उन्होंने **अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली**।

आइए हम इसे इस प्रकार पढ़ें :
अब हमारे परमेश्वर का **उद्धार** और **सामर्थ्य** और **राज्य** और उसके मसीह का **अधिकार मुझ पर प्रगट हुआ है,** क्योंकि **मुझ पर दोष लगानेवाला**, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने मुझ पर दोष लगाया करता था, **गिरा दिया गया है**। और मैं (1) **मेमने के लहू के कारण** और (2) **अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुआ हूँ,** और (3) **मृत्यु सहने तक मैंने अपने प्राणों को प्रिय नहीं जाना**।

#1 मेमने का लहू

यह प्रभु का भाग है
उसके अनुग्रह के द्वारा हमारे लिए उसका मुफ्त प्रावधान

मेरी आशा का आधार केवल यीशु का लहू और उसकी धार्मिकता है। मैं अपनी शक्ति या बुद्धि पर भरोसा रखने का साहस नहीं करता बल्कि पूरी रीति से यीशु के नाम पर आश्रित रहता हूँ।

#2 अपनी गवाही के वचन

यह हमारा भाग है
इस बात की घोषणा करना कि यीशु के लहू ने मेरे लिए क्या किया है।

#3 और मृत्यु सहने तक अपने प्राणों को प्रिय न जानते

ये तीन आवश्यक कदम हैं,
विजयी जीवन का मार्ग है

#1 यीशु के लहू से मुझे ...

- पापों की क्षमा प्राप्त होती है इब्रानियों 9:26; 10:17; भजन103:12; प्रका. 1:5
- सब पापों से शुद्ध करता है 1 यूहन्ना 1:7
- धर्मी ठहराता है रोमियों 3;24; 5:9
- पवित्र किया गया है रोमियों 12;1; 1 कुरिन्थियों 3:17; इफिसियों1:4
- धर्मी बनाया जाता है रोमियों 5:19 2 कुरिन्थियों 5:21
- पवित्र किया जाता है इब्रानियों 10:10
- अनंत जीवन प्राप्त होता है यूहन्ना 3:16
- पाप के परिणामों पर विजय मिलती है प्रकाशितवाक्य 12:11
- उसके लहू से ख़रीदा गया है प्रेरितों के काम 20:28
- अनंत छुटकारा प्राप्त होता है इब्रानियों 9:12; 1 पतरस 1:18-19
- अनंत मीरास प्राप्त होता है इब्रानियों 9:15
- शुद्ध विवेक प्राप्त होता है इब्रानियों 9:14; 10:22
- पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस प्राप्त होता है इब्रानियों 4:16; 10:19
- चंगाई मिलती है यशायाह 53:5
- मेरे प्राणों के लिए अच्छा है यशायाह 53:5
- मेरे साथ सब भला होगा यशायाह 3:10 रोमियों 8:28
- जवानी उकाब के समान नई हो जाएगी भजन 103:5
- उसकी व्यवस्था मेरे मन में बसी है इब्रानियों 10:16
- परमेश्वर मुझ पर मंडराता और मेरी रक्षा करता है निर्गमन 12:23
- मैं उसके साथ वाचा में बंधा हूँ प्रेरितों के काम 22:20

#2 मेरी गवाही के वचन

यह मेरा भाग है : यह **बताना** कि यीशु के लहू ने मेरे लिए क्या किया और क्या करेगा। विजय की सम्पूर्ण आशीषों को क्रियान्वित करने, अनुभव करने और उनका लाभ उठाने के लिए यह बहुत ज़रूरी है।

ऐसे बहुत से पद हैं जो परमेश्वर के कहे वचन के
सामर्थ्य के विषय में बताते हैं।

- सब कुछ उसके वचन के सामर्थ्य से रचा गया : उत्पत्ति 1
  फिर परमेश्वर ने **कहा**, … हो जाए … और वैसा ही हो गया।
- यूहन्ना 1:1-4 आदि में वचन था, और **वचन** परमेश्वर के साथ था, और **वचन** परमेश्वर था। **सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ**, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।
- भजन 29:4 **यहोवा की वाणी शक्तिशाली है।**
- यशायाह 55:11 उसी प्रकार से **मेरा वचन** भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास **न लौटेगा**, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह **सफल करेगा**।
- इब्रानियों 4:12 क्योंकि **परमेश्वर का वचन जीवित** (ज़िन्दा), **और प्रबल** (वह चीज़ों को रचता और बदलता है), और हर एक दोधारी **तलवार** से भी बहुत **चोखा** है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है। वह हमारे जीवन में सामर्थ्यशाली रीति से कार्य करता है।
- उदाहरण के लिए : इफिसियों 5:26 **वचन** के द्वारा जल के स्नान से **शुद्ध करके पवित्र बनाए।**
- यिर्मयाह 23:29 यहोवा की यह भी वाणी है, क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? (आग गंदगी दूर करती और शुद्ध करती है), फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले? तो मेरे कठोर सिर के लिए आशा है।

परमेश्वर ने अपने वचन को सुनाने का अधिकार हमें दिया है और उसने उस वचन को बोलने और सुनाने के महत्व और ज़रूरत को भी व्यक्त किया है।

- इफिसियों 6:10-17 **परमेश्वर के** सारे **हथियार** बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने **खड़े रह** सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं … इसलिये **सत्य** से अपनी कमर कसकर, और **धार्मिकता** की झिलम पहिन कर, और पाँवों में मेल के **सुसमाचार** की तैयारी के जूते

पहिन कर; और इन **सब के साथ विश्वास की ढाल** लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और **उद्धार** का टोप, और **आत्मा की तलवार** ले लो, जो

परमेश्वर का वचन है।

- अय्यूब 22:28 **जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी,** और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा।
- अपने जीवन के पहाड़ों के लिए : मरकुस 11:22-23 परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुम से सच **कहता** हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो **कहता** हूँ वह हो जाएगा, तो **उसके लिये वही होगा।**

और यहाँ और भी अधिक शुभ सन्देश है — उसका वचन हमारे मनों को नया कर सकता है। अद्भुत! निराला! इसकी कितनी ज़रूरत है???

- रोमियों 12:2 इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु **तुम्हारे मन के नए हो जाने से** तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।

इससे पहले हमारा नया जन्म होता, हमने **इस संसार और उसके मार्गों के सदृश्य होने का प्रशिक्षण, विद्या पाई।**

यह **बहुत गंभीर** बात है कि हमारे मन और हमारे सोचने का तरीका ऐसा परिवर्तित हो जाता है कि हम यीशु के समान, सत्य अर्थात परमेश्वर के वचन के अनुसार सोचें, कार्य करें और प्रत्युत्तर दें।

"मन को नया करना" आसान नहीं है। यह बहुत ही कठिन काम है और इसके लिए समर्पित प्रयास और इच्छा की ज़रूरत होती है।

इसका आरम्भ परमेश्वर के वचन को **जानने** और उसे **कंठस्थ** करने से होता है। वे बच्चे जिनकी परवरिश मसीही घर में होती है और घर में ही पढ़ाया जाता है, उन्हें इसका लाभ है।

पौलुस निम्नलिखित पद में एक बहुत महत्वपूर्ण कदम का ज़िक्र करता है :

- फिलिप्पियों 3:13-14 हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि **जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की**

बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

प्रतिदिन परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उस कूड़ा-करकट हो भूलने में आपकी सहायता करे जो आपके मन में है। जब वह ऊपर आए, तो उसके ठहरने न दें। तुरंत उन पदों को दोहराना शुरू कर दें जो आपने कंठस्थ की हैं।

जैसे पौलुस ने कहा :
इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं **उन पर ध्यान लगाया करो।** फिलिप्पियों 4:8

हमारे मन नए हो सकते हैं! जैसा परमेश्वर ने कहा :
2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : **पुरानी बातें बीत गई हैं;** देखो, **सब बातें नई हो गई हैं।**

प्रकाशितवाक्य 21:5 जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, **मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।"** फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।"

धन्यवाद प्रभु यीशु
मेरा मन नया किया जा रहा!
और
"मैं जो कुछ भी हूँ, वह हूँ"

परन्तु **मैं जो कुछ भी हूँ,** परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह **व्यर्थ नहीं हुआ**; परन्तु **मैं ने** उन सब से बढ़कर **परिश्रम भी किया**: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था,
और यीशु मसीह के लहू से हुआ। 1कुरिन्थियों15:10

- **मैंने परिश्रम किया** मुझे यह बताते हुए काम करना, परिश्रम करना चाहिए कि मैं कौन हूँ। और इसे बताएं जब तक मैं उस पर विश्वास न कर लूँ!
- मैं वह हूँ जाओ मेरा पिता कहता है कि मैं हूँ और उसका अनुग्रह जो मुझ पर है, वह **व्यर्थ**/फलरहित नहीं है

मैं बताऊँगा कि मैं कौन हूँ!

और वह बना रहेगा !

- मैं परमेश्वर की संतान हूँ और वह मेरा पिता है। 1 यूहन्ना 3:1-2
- मैं परमेश्वर द्वारा चुना गया हूँ। इफिसियों 1:4
- मेरा नया जन्म हुआ है। 1 पतरस 1:3, 23
- मैं परमेश्वर का मंदिर हूँ। 1 कुरिन्थियों 3:16
- मैं पवित्र आत्मा का पात्र हूँ 1 कुरिन्थियों 6:19-20
- मैं बहुमूल्य हूँ, बहुत विशेष हूँ, यीशु के लहू से छुड़ाया हुआ। 1 पतरस 1:18
- मैं यीशु के लिए राज-पदधारी याजक हूँ 1 पतरस 2:19
- मैं नई सृष्टि हूँ 2 कुरिन्थियों 5:17
- मैं धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया हूँ इफिसियों 4:24
- मैं पवित्र जन हूँ 1 कुरिन्थियों 1:2; इफिसियों 1:1;फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:2
- मैं मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी हूँ रोमियों 8:17
- मैं यीशु मसीह का सेवक हूँ 2 कुरिन्थियों 5:18
- मैं मसीह का राजदूत हूँ जिसे उसकी ओर से बोलने का अधिकार प्राप्त है 2 कुरिन्थियों 5:20
- मैं पृथ्वी का नमक हूँ मत्ती 5:13
- मैं जगत की ज्योति हूँ मत्ती 5:14
- मैं इस संसार के लिए परदेशी और यात्री हूँ 1 पतरस 2:11
- मेरी नागरिकता स्वर्ग की है फिलिप्पियों 3:20
- मैं उसके गुणों का वर्णन करनेवाला हूँ 1 पतरस 2:9

यह (उपरोक्त) वह है जो मैं हूँ

यह सब यीशु मसीह के लहू के द्वारा

और उसी के कारण है

उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह **व्यर्थ** (बेकार) **नहीं हुआ**; परन्तु **मैं ने** उन सब से बढ़कर **परिश्रम भी किया**: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था। 1 कुरिन्थियों15:10

मैं मेमने के लहू और अपनी गवाही के वचन के द्वारा “जयवंत” हूँ। और यह मेरी गवाही के वचन हैं।

- **मैं जानता** हूँ कि मैं परमेश्वर से हूँ, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। 1 यूहन्ना 5:19
- क्योंकि **जो कुछ** परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, **वह संसार पर जय प्राप्त करता है;** और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है **मेरा विश्वास है।** 1 यूहन्ना 5:4
- **मैं न तो** संसार से **और न** संसार में की **वस्तुओं से** प्रेम रखता हूँ और न रखूँगा। 1 यूहन्ना 2:15
- **मैं** इस संसार के **उन लोगों के समान न चलता हूँ और न चलूँगा** जो अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं।

  इफिसियों 4:17-20 इसलिये मैं यह कहता हूँ और प्रभु में आग्रह करता हूँ कि जैसे **अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं,** तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी **बुद्धि अन्धेरी हो गई है,** और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और **उनके मन की कठोरता** के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं; और **वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं** कि सब प्रकार के **गन्दे काम लालसा से किया करें।** पर **तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई।**

- यशायाह 54:17 जितने **हथियार** मेरी **हानि के लिये बनाए जाएँ,** उन में से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुद्दई होकर मुझ पर नालिश करें उन सब से मैं जीत जाऊँगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा।
- **मैं बलवन्त हूँ,** और परमेश्वर का वचन मुझ में बना रहता है, और मैंने **उस दुष्ट पर जय पाई है।** 1 यूहन्ना 2:14

अपने जीवन में “दानवों” पर जय पाने के लिए,
मेरी गवाही दाऊद की गवाही है।

और मैं दानवों से कहूँगा :
तू तो संसार के हथियारों के साथ मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा, **यीशु के नाम से** तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है। आज के दिन **यहोवा तुझ को**

मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूँगा कि समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। और **यह समस्त मण्डली जान लेगी कि संग्राम तो यहोवा का है,** और **वही** तुम्हें हमारे **हाथ में कर देगा।"** 1 शमूएल 17:45-48

- मैं भरमानेवाली अभिलाषाओं, झूठ बोलने, क्रोध करने या किसी और पाप के कारण शैतान को अवसर **नहीं दूँगा।** इफिसियों 4:22-27
- शान्ति का परमेश्वर शैतान को मेरे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। रोमियों 16:19
- **मैं** परमेश्वर के सारे हथियार बाँध **लूँगा** कि शैतान की युक्तियों के सामने खड़ा रह सकूँ। इफिसियों 6:11
- क्योंकि मैंने यहोवा को अपना शरणस्थान ठहराया है; परमप्रधान को अपना धाम माना लिया है, इसलिये **कोई विपत्ति मुझ पर न पड़ेगी,** न कोई दुःख मेरे डेरे के निकट आएगा। क्योंकि वह अपने दूतों को मेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं मैं जाऊं वे मेरी रक्षा करें। भजन 91:9-11

परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु मसीह के लहू के द्वारा

.....

तो फिर, मैं क्यों?

- मैं क्यों कहूँ कि "मैं नहीं कर सकता"? जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें **मैं सब कुछ कर सकता हूँ।** फिलिप्पियों 4:13
- मैं क्यों चिंता करूँ? परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, **मेरी हर एक घटी को पूरी करेगा।** फिलिप्पियों 4:19
- मैं क्यों डरूं? **मैं किस से डरूँ?** यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊँ? भजन 27:1 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। 2 तीमुथियुस 1:7
- मैं क्यों प्रयास न करूँ? परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे **हियाव बाँधकर बड़े काम करेंगे।** दानिय्येल 11:32
- मैं क्यों पराजय को स्वीकार करूँ? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें **जयवन्त** करता है। 1 कुरिन्थियों 15:57

- मुझमें क्यों बुद्धि की घटी रहे? पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी। याकूब 1:5
- मैं क्यों निराश रहूँ? और जबकि मेरा प्राण मुझमें प्राण ढला जाता है, फिर भी मैं यह स्मरण करता हूँ, और इसी लिये मुझे आशा है। विलापगीत 3:20-26
- मैं चिंतित और परेशान क्यों रहूँ? अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। 1 पतरस 5:7

  फिलिप्पियों 4:6-7 **किसी भी बात की चिन्ता मत करो**; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, **प्रार्थना** और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। 7तब **परमेश्वर की शान्ति**, जो सारी समझ से परे है, **तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को** मसीह यीशु में **सुरक्षित रखेगी**।
- मैं अपने को दंड के योग्य क्यों समझूं? अतः अब **जो** मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। रोमियों 8:1
- मैं अपने को अकेला क्यों समझूं? मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। मत्ती 28:20 मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा। इब्रानियों 13:5
- मैं अपने को मूल्यहीन क्यों समझूं? यह जानते हुए कि तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् **मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ**। 1 पतरस 1:18-19
- चारों ओर अन्य बातों से घिरा होने पर मैं अपने को भयभीत क्यों समझूं? परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। रोमियों 8:37
- मैं अपने को असफल व्यक्ति के समान क्यों समझूं? अतः हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? रोमियों 8:31
- मैं क्यों संसार की कूटनीतियों और समस्याओं से परेशान होऊं? मैं ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है। यूहन्ना 16:33

#3 और मैं मृत्यु सहने तक अपने प्राणों को प्रिय न जानता

यदि हम पूर्ण आशीषित जीवन का आनंद उठाना चाहते हैं तो यह कदम पूर्णतः आवश्यक है। यह मेरे जीवन को भक्तिपूर्ण बदलाव से सशक्त करता है जो फिर दूसरों को भी बदलता है। कभी-कभार से बढ़कर बहुत विरले विश्वासी ही इस स्तर पर अपना नियमित जीवन जी पाते हैं।

सच्चाई यह है : गलातियों 2:20

मैं मसीह के साथ **क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ**, अब **मैं जीवित न रहा**, पर **मसीह मुझ में जीवित है**; और **मैं** शरीर में अब **जो जीवित हूँ** तो केवल **उस विश्वास से जीवित हूँ** जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने **मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।**

यीशु ने इस प्रकार कहा :

लूका 9:23-24 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो **अपने आप से इनकार करे** और **प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।** क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।

पौलुस ने इस बात को इस तरह रखा : और हमें यह करना चाहिए!

इफिसियों 4:17-24 इसलिये मैं यह कहता हूँ और प्रभु में आग्रह करता हूँ कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की **अनर्थ रीति पर चलते हैं**, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं; और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें।पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी और, जैसा **यीशु में सत्य है**, उसी में **सिखाए भी गए** कि (1) **तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को** जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो और **अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ,** और (2) **नये मनुष्यत्व को पहिन लो** जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

पौलुस ने भी इस जीवन के लाभ को रोमियों 6:4 में व्यक्त किया है

अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए (स्थापित किए गए), ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, **वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।** रोमियों 6:4

यह अच्छा समाचार है! न सिर्फ हमारा **मन नया हो सकता है** बल्कि हम नए **जीवन की सी चाल भी चल सकते हैं।**

केवल उस सीमा तक जिसे हम जानते, समझते और सराहते हैं, जो परमेश्वर हमारे पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह ने हमारे लिए अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा किया, हम **अपने क्रूस को उठाएंगे – अपना इनकार करना – और सचमुच अपने प्रभु के पीछे चलेंगे।**

जैसा कहा गया है : इब्रानियों 12:14 **मसीह का लहू** जिसने **अपने आप को** सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष **चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को** मरे हुए कामों से क्यों न **शुद्ध करेगा** ताकि तुम **जीवते परमेश्वर की सेवा करो।**

यीशु ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया : यूहन्ना 12:24
मैं तुम से **सच सच** कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर **मर** नहीं जाता, वह **अकेला** रहता है; परन्तु **जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।**

- ❖ उन थोड़ों में से एक बनो। अद्भुत, आत्मा से भरे, आशीषित, अलौकिक जीवन के लिए इन तीन क़दमों का अनुसरण करें।

मेरी आशा यीशु के लहू और उसकी धार्मिकता को छोड़ और किसी पर नहीं है। मैं अपनी शक्ति या बुद्धि पर बिलकुल भरोसा नहीं करता परन्तु पूरी तरह से यीशु के नाम पर आश्रित रहता हूँ।

परिशिष्ट :

विचार - > शब्द - > विश्वास - > कार्य - > आदत - > चरित्र - > गंतव्य

जिस तरह से आप **सोचते** हैं वह आपके **बोलने**, अर्थात आपके **शब्दों** को निर्धारित करता है। यह आपके **विश्वास** को विकसित करता है जो आपके **कार्यों** को निर्धारित करता है, आपके कार्य जो **आदत** बन जाते हैं आपके **चरित्र** को विकसित करती हैं जो आपके **गंतव्य** को मजबूती से दिशा देता है।

इस नमूने का पालन **"सांसारिक तरीके से"** या **"परमेश्वर के तरीके"** से किया जा सकता है।

यीशु ने कहा : **मैं सच बोलता हूँ** यूहन्ना 8:45 **मैं ही सत्य हूँ** यूहन्ना 14:6

शैतान के विषय में बोलते हुए यीशु ने कहा : यूहन्ना 8:44-45 वह **सत्य पर स्थिर न रहा,** क्योंकि **सत्य उसमें है ही नहीं।** जब वह झूठ बोलता, तो अपने **स्वभाव** (चरित्र) ही से बोलता है; क्योंकि **वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है।**

और : **सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है** 1 यूहन्ना 5:19

हमारे विषय में बोलते हुए, इससे पहले हमारा नया जन्म होता :
उसने **तुम्हें** भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस **संसार की रीति पर,** और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें (हम उन "से" नहीं थे) हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर **और मन की** इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव (जिस तरह हमारा व्यवहार था) ही से क्रोध की सन्तान थे। इफिसियों 2:1-4

परन्तु नया जन्म पाने के बाद, यह हमारे लिए अनिवार्य है कि हम : **इस संसार के सदृश न बनो;** परन्तु तुम्हारे **मन के नए हो जाने से** तुम्हारा **चाल-चलन भी बदलता जाए,** जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। रोमियों 12:2

वह दुष्ट जन हमारे मन को भी नियंत्रित करने के लिए **कड़ा संघर्ष करता है।** इसी लिए "उस दुष्ट, उस झूठे" ने हमारी सरकार, हमारे स्कूलों और हमारे मनों से परमेश्वर के वचन को हटाने के लिए कठोर परिश्रम किया है।

2 कुरिन्थियों 6:17 **इसलिये** प्रभु कहता है, **"उनके बीच में से निकलो और अलग रहो;** और अशुद्ध वस्तु मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा;

1 यूहन्ना 2:15-17 **तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो।**

याकूब 1:27 हमें बताता है कि **शुद्ध** और **पवित्र जीवन** के लिए हम "अपने आप को **संसार से निष्कलंक रखें।**" और (4:4) ... **जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।**

2 पतरस 1:4 जिनके द्वारा उसने हमें **बहुमूल्य** और **बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी** हैं, ताकि **इनके द्वारा** तुम उस **सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो** जाओ। हमें इसी चीज़ की ज़रूरत है और इसी के लिए हमें अग्रसर रहना है।

हमें अपने मनों को परमेश्वर के वचन, **बहुमूल्य** और **बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं** से नया करना चाहिए, ताकि **इनके द्वारा** तुम **उस सड़ाहट से छूटकर,** जो **संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।**

प्रगति :

1. विचार - हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, **खण्डन करते हैं**; और **हर एक भावना को कैद करके** मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। 2 कुरिन्थियों 10:5-6

   नीतिवचन 23:7 क्योंकि जैसा मनुष्य अपने मन में **विचार करता है, वैसा वह आप है।**

2. शब्द : प्रकाशितवाक्य 12:11 वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी **गवाही के वचन के कारण** उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।

3. विश्वास - मत्ती 9:29 **तुम्हारे विश्वास के** अनुसार तुम्हारे **लिये हो।**

4. कार्य – दानिय्येल 11:32 और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे, उनको वह चिकनी-चुपड़ी बातें कह कहकर भक्तहीन कर देगा; **परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बाँधकर बड़े काम करेंगे।**

5. आदत – परिस्थितियों का प्रत्युत्तर देने और या व्यवहार का वर्तमान तरीका

6. चरित्र – जिस तरह व्यक्ति निरंतर सोचता, महसूस करता और आचरण करता है।

7. गंतव्य – वे विश्वास, आदतें और चरित्र जो किसी के भविष्य को मजबूती के साथ दिशा देता है।